तुलसी विवाह कथा — देवीभागवत का चयनित पूर्ण प्रसंग

Tulsi Vivah Katha — Complete Selected Devi Bhagavata Account

Source: Sanskrit Wikisource contributors — Devi Bhagavata 9.17, exact revision 75089. Also compared: Sanskrit Wikisource contributors — Devi Bhagavata 9.18, exact revision 75090; Sanskrit Wikisource contributors — Devi Bhagavata 9.19, exact revision 75091; Sanskrit Wikisource contributors — Devi Bhagavata 9.20, exact revision 75092; Sanskrit Wikisource contributors — Devi Bhagavata 9.21, exact revision 75093; Sanskrit Wikisource contributors — Devi Bhagavata 9.22, exact revision 75094; Sanskrit Wikisource contributors — Devi Bhagavata 9.23, exact revision 75095; Sanskrit Wikisource contributors — Devi Bhagavata 9.24, exact revision 75096; Sanskrit Wikisource contributors — Devi Bhagavata 9.25, exact revision 75097; CC BY-SA 4.0 — source and original adaptation licence; Wisdomlib, Vijnanananda translation — 9.17 comparison only; prose not reused; Wisdomlib, Vijnanananda translation — 9.18 comparison only; prose not reused; Wisdomlib, Vijnanananda translation — 9.19 comparison only; prose not reused; Wisdomlib, Vijnanananda translation — 9.20 comparison only; prose not reused; Wisdomlib, Vijnanananda translation — 9.21 comparison only; prose not reused; Wisdomlib, Vijnanananda translation — 9.22 comparison only; prose not reused; Wisdomlib, Vijnanananda translation — 9.23 comparison only; prose not reused; Wisdomlib, Vijnanananda translation — 9.24 comparison only; prose not reused; Wisdomlib, Vijnanananda translation — 9.25 comparison only; prose not reused.

Valkala's own retelling of the katha in Devi Bhagavata Purana 9.17–25, complete selected Tulasi/Shankhachuda narrative and closing discourse: 658 numbered verse positions plus an unnumbered distich in 9.24. Original condensed prose, not a verse transcription or wedding manual., not a transcription of the original text.

जन्म, स्मृति और ब्रह्मा का वर

KATHA 9.17.1–48

नारायण नारद को धर्मध्वज और माधवी का प्रसंग सुनाते हैं। गन्धमादन में उनका दीर्घ दाम्पत्य मिलन और फिर माधवी का गर्भ वर्णित है। कथा दिव्य वर्षों की असाधारण अवधि बताती है। कार्तिक पूर्णिमा के शुभ अवसर पर लक्ष्मी के अंश से कन्या जन्म लेती है। उसके रूप की कोई तुलना न कर पाने के कारण उसका नाम तुलसी रखा जाता है। जन्म का यह पौराणिक प्रसंग किसी वर्तमान वर्ष की विवाह-तिथि नहीं बताता।

सबके रोकने पर भी तुलसी बदरीवन में तप करने जाती हैं। उनकी इच्छा नारायण को पति रूप में पाने की है। स्रोत एक लाख दिव्य वर्षों का कठोर तप, मौसम का कष्ट और आहार का क्रमशः त्याग बताता है। यह कथा की अलौकिक तप-भाषा है, भूखे रहने या शरीर को संकट में डालने का निर्देश नहीं। ब्रह्मा प्रकट होकर उन्हें वर माँगने को कहते हैं।

तुलसी कहती हैं कि वे पहले गोलोक में कृष्ण की प्रिय गोपी थीं। कृष्ण के साथ मिलन देखकर राधा ने क्रोध में उन्हें मानव जन्म का शाप दिया था। कृष्ण ने पृथ्वी पर तप और ब्रह्मा के वर से अपने चार-भुज अंश को पाने का आश्वासन दिया। तुलसी उसी इच्छा को ब्रह्मा के सामने रखती हैं। ब्रह्मा बताते हैं कि कृष्ण के अंश से उत्पन्न गोप सुदामा भी राधा के शाप से दानव वंश में शंखचूड़ हुए हैं। उन्हें पूर्वजन्म याद है, और तुलसी भी अपने पूर्वजन्म को जानती हैं। पहले शंखचूड़ से उनका विवाह होगा; बाद में नारायण का संग और पवित्र पौधे का रूप मिलेगा। वृन्दावनी नाम, माधव की पूजा में तुलसी-पत्र का स्थान और कृष्ण का साथ भी इस भविष्यवचन में आते हैं। यह तुलसी की महिमा का स्रोत-कथन है, किसी की पूजा को असफल ठहराने का नियम नहीं।

तुलसी स्पष्ट करती हैं कि उनकी विशेष चाह दो-भुज कृष्ण के लिए है; उन्होंने चार-भुज नारायण का वर

कृष्ण के कहने पर माँगा था। वे राधा का भय दूर करने की प्रार्थना करती हैं। ब्रह्मा राधा के मन्त्र, स्तोत्र, कवच और उपासना का ज्ञान देकर उन्हें राधा की प्रिय होने और कृष्ण का साथ पाने का आश्वासन देते हैं। अध्याय उनके प्रसन्न होने, तप की थकान मिटने, भोजन और विश्राम के साथ समाप्त होता है। यह पुनर्कथन मन्त्र या दीक्षा-विधि उपलब्ध कराने का दावा नहीं करता।

Narayana tells Narada about Dharmadhvaja and Madhavi. The story describes their long marital union at Gandhamadana and Madhavi's pregnancy, using extraordinary spans of divine years. On an auspicious Kartika full moon, a daughter is born as a portion of Lakshmi. Her incomparable beauty explains the name Tulasi. This mythic birth setting does not determine a present-day wedding observance.

Despite others trying to stop her, Tulasi goes to Badari to seek Narayana as her husband through austerity. The source gives a hundred thousand divine years of severe penance, exposure to the seasons and progressively abandoning food. These are supernatural narrative motifs, not instructions to starve or endanger the body. Brahma appears and offers her a boon.

Tulasi recalls being a beloved cowherd companion of Krishna in Goloka. After seeing her union with Krishna, Radha angrily cursed her to human birth. Krishna assured her that earthly penance and Brahma's boon would bring her his four-armed manifestation. She now asks for that fulfilment. Brahma explains that Sudama, a cowherd arising from Krishna, has likewise been born among the Danavas as Shankhachuda after Radha's curse. Both retain memories of their earlier lives. Tulasi will first marry Shankhachuda; later she will have Narayana's company and become a sacred plant. Brahma also foretells the name Vrindavani, the place of her leaves in Madhava's worship and companionship with Krishna. The source's praise of Tulasi is not a rule for declaring someone else's worship invalid.

Tulasi explains that her deepest longing is for the two-armed Krishna; she requested the four-armed Narayana because Krishna had told her to do so. She asks to be free of fear of Radha. Brahma gives knowledge of Radha's mantra, praise, protective hymn and worship, with assurances of becoming dear to Radha and regaining Krishna's company. The chapter closes with Tulasi contented, relieved of the fatigue of penance, eating and resting. This retelling neither supplies an initiation nor claims to teach the mantra practice.

शंखचूड़ से भेंट और विवाह का आशीर्वाद

KATHA 9.18.1–100

अगले अध्याय में तुलसी की युवावस्था, प्रेम की व्याकुलता और स्वप्न में प्रिय पुरुष को देखने का वर्णन है। शंखचूड़ जैगीषव्य से कृष्ण-मन्त्र पाकर पुष्कर में साधना कर चुके हैं। वे कवच धारण करते हैं और ब्रह्मा के वर तथा आदेश से बदरी आते हैं। स्रोत दोनों के सुन्दर रूप और आभूषणों का विस्तार देता है। शंखचूड़ तुलसी के पास बैठकर परिचय पूछते हैं; तुलसी स्वयं को धर्मध्वज की पुत्री और वन में तप करने वाली बताती हैं। अध्याय का आरम्भ उन्हें वृषध्वज से जोड़ता है, जबकि इसी संवाद और पिछले अध्याय में धर्मध्वज नाम है। यह स्रोत की नाम-असंगति है, अलग वंशावली जोड़ने का आधार नहीं।

तुलसी एकान्त में अपरिचित पुरुष के बात करने पर प्रश्न उठाती हैं। फिर संवाद में स्त्रियों के बारे में कठोर और अपमानजनक सामान्य कथन आते हैं: आकर्षक बाहर और कपटी भीतर होने, कामना तथा साधना में बाधा बनने के आरोप। शंखचूड़ इन कथनों को आंशिक रूप से स्वीकार और आंशिक रूप से अस्वीकार

करते हैं। वे देवियों और उनके अंशों की प्रशंसा करते हुए स्त्रियों को गुणों के आधार पर ऊँचे-नीचे वर्गों में रखते हैं। लक्ष्मी, सरस्वती, दुर्गा, राधा और अनेक अन्य देवियों तथा स्त्री-पात्रों की नामावली आती है। यह कथा का पुराना सामाजिक विमर्श है; स्त्रियों के स्वभाव, मूल्य या अधिकार के बारे में हमारा निर्णय नहीं।

शंखचूड़ बताते हैं कि वे पहले कृष्ण के पार्षद सुदामा थे और अब राधा के शाप से दानव वंश में जन्मे हैं। उन्हें अपना पूर्वजन्म याद है। तुलसी कहती हैं कि उन्होंने उनके ज्ञान को परखने के लिए संवाद किया। इसके बाद स्रोत स्त्री के वश में पुरुष की निन्दा, जाति के अनुसार अशौच की अवधि, विवाह में वर के गुण-दोष और कन्या को धन के लिए बेचने के दण्ड की चर्चा करता है। उसमें रोग, गरीबी और विकलांगता के प्रति भेदभावपूर्ण भाषा तथा नरक और पुनर्जन्म के दण्ड-वचन भी हैं। इन्हें विवाह-सलाह, जाति-नियम या किसी रोग और विकलांगता का नैतिक कारण न मानें। कन्या को सम्पत्ति या बिक्री की वस्तु मानना स्वीकार्य नहीं; इस पुनर्कथन में दण्ड की वीभत्स बातें नहीं दोहराई गई हैं।

ब्रह्मा प्रकट होकर दोनों को गुणवान बताते हैं और गान्धर्व विवाह करने को कहते हैं। वे अनेक दिव्य दम्पतियों के उदाहरण देकर तुलसी को शंखचूड़ की प्रिय पत्नी होने और उनके साथ रहने का आशीर्वाद देते हैं। शंखचूड़ की मृत्यु के बाद गोलोक में कृष्ण और वैकुण्ठ में उनके चार-भुज रूप का संग पाने का आश्वासन भी देते हैं। यह अध्याय उसी आशीर्वाद पर समाप्त होता है; आगे का विवाह और जीवन अगले अध्याय में आता है। किसी पाठक के लिए विवाह, साथी पर अधिकार या आध्यात्मिक फल की गारंटी इससे नहीं निकलती।

The next chapter describes Tulasi's youth, restless longing and a dream of a beloved man. Shankhachuda has received Krishna's mantra from Jaigishavya and practised at Pushkara. Wearing a protective kavacha and having received Brahma's boon and instruction, he arrives at Badari. The source elaborates both characters' beauty and ornaments. He sits near Tulasi and asks her identity; she calls herself Dharmadhvaja's daughter, practising penance in the forest. The opening instead associates her with Vrishadhvaja. This internal naming inconsistency, also differing from the comparison translation's dialogue, is not repaired by inventing another genealogy.

Tulasi questions an unfamiliar man addressing her in seclusion. The dialogue then turns to hostile generalizations about women: outward attraction concealing deceit, desire and obstacles to spiritual practice. Shankhachuda accepts some statements and disputes others. Praising goddesses and their manifestations, he nevertheless ranks women according to the qualities of sattva, rajas and tamas. The text lists Lakshmi, Sarasvati, Durga, Radha and many other divine and female figures. This is an old social discourse inside the narrative, not this reader's judgment about women's nature, worth or rights.

Shankhachuda identifies himself as Krishna's former attendant Sudama, born among the Danavas after Radha's curse, with memory of his earlier life. Tulasi says the exchange tested his knowledge. The source proceeds to condemn men described as subject to women, distinguish mourning impurity by caste, discuss a prospective husband's qualities and threaten punishment for selling a daughter for money. It includes discriminatory language about illness, poverty and disability, followed by threats of hell and rebirth. These are not marriage advice, caste rules or moral explanations of illness or disability. A daughter is not property for sale; graphic punishment details are not reproduced here.

Brahma appears, praises both characters and tells them to marry by the Gandharva form. Drawing comparisons with divine couples, he blesses Tulasi to be Shankhachuda's beloved wife and share life with him. He also foretells companionship with Krishna in Goloka and his four-armed form in Vaikuntha after Shankhachuda's death. The chapter ends at this blessing. The marriage and shared life follow in the next chapter. The narrative creates no entitlement to a partner and guarantees no marriage or spiritual result to a reader.

विवाह, साझा जीवन और देवताओं की प्रार्थना

KATHA 9.19.1–94

ब्रह्मा के चले जाने पर तुलसी और शंखचूड़ गान्धर्व विवाह करते हैं। दिव्य संगीत और पुष्पवर्षा से उस मिलन का उत्सव होता है। दोनों एक-दूसरे को आभूषण और उपहार देते, सेवा करते और प्रेम व्यक्त करते हैं। स्रोत उनके अन्तरंग जीवन तथा मलय, गन्धमादन और अनेक वन-उद्यानों में विहार का विस्तृत वर्णन करता है। यहाँ उसे बिना अन्तरंग विवरण के साझा दाम्पत्य जीवन के रूप में रखा गया है। शंखचूड़ एक मन्वन्तर तक राज्य करते हैं; उनकी प्रजा के लिए शान्ति का वर्णन है, पर अपने पदों से वंचित देवता सहायता चाहते हैं।

देवता पहले ब्रह्मा, फिर शिव और अन्ततः वैकुण्ठ में हरि के पास जाते हैं। स्रोत सोलह द्वारों, रत्नमय सभा, दिव्य सेवकों और लक्ष्मी, सरस्वती तथा गंगा की उपस्थिति का वर्णन करता है। देवता अपनी दशा सुनाते हैं। हरि शंखचूड़ का पूर्वजन्म बताते हैं: कृष्ण और विरजा के प्रसंग पर राधा क्रोधित हुईं; सुदामा ने विरोध किया और राधा ने उन्हें दानव जन्म का शाप दिया। बाद में राधा को पछतावा हुआ और उन्होंने उन्हें रोकना चाहा। हरि ने लौट आने का आश्वासन दिया। गोलोक और पृथ्वी की अत्यन्त अलग समय-अवधियाँ कथा का दिव्य समय हैं, ऐतिहासिक गणना नहीं।

हरि बताते हैं कि कवच और पत्नी के सतीत्व की शर्त रहते शंखचूड़ नहीं मारे जा सकते। वे वृद्ध ब्राह्मण का रूप लेकर कवच माँगने और फिर शंखचूड़ का रूप धारण कर तुलसी को धोखा देने की योजना बताते हैं। शिव को त्रिशूल दिया जाता है और देवता पृथ्वी लौटते हैं। यह आगे के छल का स्पष्ट पूर्वसंकेत है। किसी स्त्री को पुरुष की मृत्यु का दोष देना, उसकी सहमति को छल से प्राप्त मान लेना या देवत्व के आधार पर धोखे को उचित ठहराना इस पुनर्कथन का निष्कर्ष नहीं।

After Brahma leaves, Tulasi and Shankhachuda marry in the Gandharva form amid celestial music and flowers. They exchange ornaments, gifts, service and affection. The source elaborates their intimate life and travels through Malaya, Gandhamadana and many gardens and forests; here these are condensed without explicit detail. Shankhachuda rules for a manvantara, with peace described for his people, while the displaced gods seek help.

The gods approach Brahma, Shiva and finally Hari in Vaikuntha. Sixteen gateways, a jewelled assembly, divine attendants and Lakshmi, Sarasvati and Ganga frame their appeal. Hari recalls Shankhachuda's earlier life: Radha became angry over Krishna and Viraja; Sudama protested and was cursed to Danava birth. Radha regretted it and tried to stop him. Hari promised his return. The vast contrast between Goloka and earthly time is mythic, not a historical calculation.

Hari explains that Shankhachuda remains invulnerable while protected by his kavacha and the condition concerning his wife's chastity. He plans to request the kavacha disguised as an old Brahmin and then deceive Tulasi by impersonating her husband. Shiva receives a trident and the gods return to earth. This explicitly anticipates the deception. The retelling does not blame a woman for a man's death, treat fraud as consent or justify deception through divinity.

दूत का संदेश और तुलसी को सान्त्वना

KATHA 9.20.1–84

शिव नदी के तट पर वटवृक्ष के पास ठहरकर दूत भेजते हैं। स्रोत में नदी और दूत के नाम बदलते हैं; यहाँ उनसे नया भूगोल या पहचान नहीं गढ़ी गई है। दूत खाइयों, द्वारों और रत्नमय भवनों वाली राजधानी में शंखचूड़ से मिलता है। शिव का संदेश है कि देवताओं के अधिकार लौटाएँ, अन्यथा युद्ध करें। राजा शिव को अगले दिन आने को कहते हैं। दूत लौटता है और शिव के साथ स्कन्द, वीरभद्र, नन्दी, रुद्रों, दिव्य गणों तथा भद्रकाली और उनकी सेना की तैयारी का वर्णन आता है। अलौकिक अस्त्र और विशाल सेना कथा के दृश्य हैं, युद्ध करने का निर्देश नहीं।

युद्ध की बात सुनकर तुलसी दुःखी होती हैं। वे बुरे स्वप्न की चिन्ता बताकर कुछ समय साथ रहने को कहती हैं। शंखचूड़ काल, कर्म और परिवर्तन की चर्चा करते हैं: वृक्ष बढ़ते, फूलते, फल देते और मिटते हैं; सृष्टियाँ भी उत्पन्न और लीन होती हैं। वे परम प्रकृति और परमात्मा की शरण को स्थायी आधार बताते हैं, जिनके अधीन सृष्टि, पालन, संहार और प्राकृतिक शक्तियाँ हैं। मिलन-वियोग तथा सुख-दुःख बदलते रहते हैं। यह पात्र का धार्मिक उपदेश है, किसी दुःखी व्यक्ति को अज्ञानी कहने या उसके कष्ट को उसका दोष मानने का आधार नहीं।

शंखचूड़ तुलसी को नारायण का साथ मिलने और दोनों के गोलोक लौटने का आश्वासन देते हैं। शाम और रात वे साथ बिताते हैं। रोती तुलसी ने भोजन नहीं किया था; इसे व्रत का निर्देश न समझें। शंखचूड़ कृष्ण से भाण्डीरवन में पाए ज्ञान को साझा करते हैं, और तुलसी क्षणभंगुरता के विचार से कुछ सान्त्वना पाती हैं। अध्याय उनके प्रेम, हँसी और बातचीत पर समाप्त होता है। कथा की दिव्य पुनर्मिलन-आशा किसी पाठक के लिए मृत्यु, आत्महानि या निश्चित परलोक का सुझाव नहीं।

Shiva sends a messenger from his riverside banyan camp. The source varies the river and messenger names; no new geography or identity is invented to reconcile them. The messenger reaches Shankhachuda through the moats and gateways of a jewelled capital. Shiva demands restoration of the gods' rights or battle. The king invites Shiva to come the next morning. The messenger returns, and preparations involve Skanda, Virabhadra, Nandi, Rudras, divine hosts and Bhadrakali's army. Their supernatural weapons and enormous forces are narrative imagery, not instructions for warfare.

Tulasi grieves at the prospect of war and asks for time together after a disturbing dream. Shankhachuda speaks of time, action and change: trees grow, flower, bear fruit and perish; universes also arise and dissolve. He presents supreme Prakriti and the highest Self as the enduring refuge governing creation, preservation, dissolution and natural powers. Union, separation, joy and sorrow alternate. This is a character's religious teaching, not grounds to call grieving people ignorant or blame them for suffering.

He promises Tulasi companionship with Narayana and their eventual return to Goloka. They spend the evening and night together. Her distress has kept her from eating; this is not a fasting prescription. Sharing knowledge received from Krishna in Bhandira, he consoles her through reflection on impermanence. Affection, laughter and conversation close the chapter. Its divine reunion is not advice about death or self-harm and guarantees no reader's afterlife.

प्रस्थान और शिव से संवाद

KATHA 9.21.1–82

भोर में शंखचूड़ शुद्धि और कृष्ण की पूजा करते हैं। वे ब्राह्मणों, गुरु और जरूरतमन्द ब्राह्मणों को बड़े दान देते हैं। पुत्र को राज्य सौंपते और तुलसी, प्रजा तथा कोष की जिम्मेदारी देते हैं। विशाल सेना लेकर सिद्धाश्रम के वटवृक्ष के पास पहुँचते हैं। सेना की संख्याएँ संस्कृत और अंग्रेजी तुलना में समान नहीं; उन्हें ऐतिहासिक गणना नहीं माना गया है। शंखचूड़ शिव, भद्रकाली और स्कन्द को प्रणाम करते हैं और आशीर्वाद पाते हैं। युद्ध से पहले दोनों पक्षों का यह आदर भी कथा का हिस्सा है।

शिव ब्रह्मा, मरीचि, कश्यप, दनु, विप्रचित्ति और दम्भ की वंश-परम्परा बताकर राजा को कृष्ण-भक्त सुदामा का जन्म कहते हैं। दम्भ ने शुक्राचार्य की सलाह से तप किया था। शिव समझाते हैं कि हरि की सेवा चाहने वाले भक्त पद, ऐश्वर्य और मुक्ति के प्रकारों से अधिक सेवा को महत्त्व देते हैं। वे देवताओं के अधिकार लौटाकर अपना राज्य रखने को कहते हैं, क्योंकि देव और दानव कश्यप के परिवार से हैं। युगों में धर्म, सूर्य का ताप, चन्द्रमा की कलाएँ, राजसत्ता और जगत की दशा बदलते हैं; परम आधार नहीं बदलता। बलि का पाताल में रहना और भविष्य में इन्द्र होना परिवर्तन का उदाहरण है।

शंखचूड़ सम्मान से पूछते हैं कि बलि तथा अन्य असुरों के साथ देवताओं का व्यवहार कैसा रहा और समुद्र-मन्थन में साझा श्रम का लाभ देवताओं को ही क्यों मिला। वे इसे काल और दिव्य लीला का प्रश्न बनाते हैं तथा शिव की निष्पक्षता और युद्ध के गौरव पर प्रश्न उठाते हैं। शिव पूर्व दिव्य युद्धों के उदाहरण देकर कहते हैं कि कृष्ण के पार्षद से लड़ना अपमान नहीं और अपना संदेश दोहराते हैं। राजा मन्त्रियों के साथ उठकर लौटते हैं। दोनों पक्षों के तर्क सुरक्षित हैं; किसी समुदाय की स्थायी नैतिक श्रेष्ठता या हिंसा का अधिकार नहीं निकाला गया है। अंग्रेजी अनुवाद की आधुनिक विज्ञान-संबंधी टिप्पणियाँ इस संस्कृत कथा में नहीं जोड़ी गई हैं।

At dawn Shankhachuda purifies himself, worships Krishna and makes extensive gifts to Brahmins, his teacher and needy Brahmins. He installs his son as king, entrusting Tulasi, the people and treasury to him, then leads his army to the banyan at Siddhashrama. Sanskrit and English army totals differ and are not treated as historical statistics. He bows to Shiva, Bhadrakali and Skanda and receives blessings. Mutual respect before battle belongs to the account too.

Shiva traces the line through Brahma, Marichi, Kashyapa, Danu, Viprachitti and Dambha, identifying the king as Krishna's devotee Sudama reborn. Dambha practised austerity on Shukra's advice. Shiva values service to Hari above rank, prosperity and forms of liberation. He asks the king to restore the gods' rights while retaining his own kingdom, since both families descend from Kashyapa. Dharma through the ages, the sun's heat, lunar phases, sovereignty and worlds change; the supreme foundation does not. Bali's present residence below and future Indrahood illustrate reversal.

The king respectfully questions the gods' treatment of Bali and other Asuras, and why shared labour in churning the ocean benefited the gods alone. He invokes time and divine play, questioning Shiva's neutrality and the glory of this war. Shiva cites earlier divine battles, denies that fighting Krishna's attendant is dishonourable and repeats his demand. The king departs with his ministers. Both arguments are retained

without assigning permanent moral superiority or a right to violence to any community. The English translator's modern scientific notes are not imported into the Sanskrit narrative.

युद्ध और युद्ध रोकने वाला आकाशवचन

KATHA 9.22.1–75

देव और दानव सेनाओं में युद्ध आरम्भ होता है। स्रोत अनेक योद्धाओं की जोड़ी और उनके अस्त्रों का वर्णन करता है। घायल देवता पीछे हटते हैं; स्कन्द उन्हें ढाढ़स देकर युद्ध करते और दानव सेना को पीछे धकेलते हैं। काली का भयंकर युद्ध-रूप भी वर्णित है। यहाँ नामावलियों और रक्तपात का विस्तार संक्षिप्त है, पर दोनों पक्षों का संघर्ष और हानि छिपाई नहीं गई है।

शंखचूड़ बाणों और पर्वत, सर्प, पत्थर तथा वृक्षों की अलौकिक वर्षा से स्कन्द को घेरते हैं। दोनों के बीच अस्त्रों का आदान-प्रदान और रथ-धनुष का टूटना आता है। स्कन्द अचेत हो जाते हैं। काली उन्हें शिव के पास लाती हैं और शिव अपनी दिव्य शक्ति से उन्हें पुनः समर्थ करते हैं। यह पौराणिक प्रसंग उपचार का तरीका नहीं। फिर काली शंखचूड़ से लड़ती हैं। नारायणास्त्र के सामने राजा प्रणाम करके प्रतिरोध नहीं करते; अन्य अस्त्रों को अस्त्रों से रोकते हैं।

काली पाशुपतास्त्र चलाना चाहती हैं, लेकिन आकाशवचन रोकता है: कवच और पत्नी के सतीत्व की शर्त के कारण राजा की मृत्यु नहीं हो सकती। यह कथा की वर-शर्त है, तुलसी पर दोष नहीं। शारीरिक प्रहार और फेंके जाने के बाद भी राजा सँभल जाते हैं। वे काली को माता मानकर उन पर आक्रामक अस्त्र नहीं चलाते, केवल बचाव करते हैं। काली शिव को युद्ध और उस बाधा की सूचना देती हैं। बची हुई सेना की विशाल संख्या के साथ अध्याय समाप्त होता है। अलौकिक अजेयता किसी मनुष्य की सुरक्षा की गारंटी नहीं।

The divine and Danava armies clash. The source names many paired opponents and weapons. Wounded gods retreat; Skanda reassures them, fights and drives back the Danavas. Kali's terrifying battle form is described too. Catalogues and graphic bloodshed are condensed, without concealing the struggle and losses on both sides.

Shankhachuda surrounds Skanda with arrows and supernatural showers of mountains, snakes, stones and trees. Weapons are exchanged and chariots and bows broken. Skanda falls unconscious. Kali carries him to Shiva, who restores his strength through divine power. This mythic scene is not a treatment method. Kali then fights Shankhachuda. He bows without resistance before the Narayana weapon and counters other weapons with his own.

A celestial voice prevents Kali from using the Pashupata weapon: the kavacha and the condition concerning his wife's chastity still prevent his death. This is the story's boon condition, not blame assigned to Tulasi. The king recovers from blows and being thrown. Revering Kali as mother, he does not launch an offensive weapon against her, but defends himself. Kali reports the battle and this obstacle to Shiva. The chapter closes with the remaining forces. Supernatural invulnerability guarantees no human safety.

शंखचूड़ की मृत्यु और शंख का प्रसंग

KATHA 9.23.1–30

शिव स्वयं युद्ध में आते हैं। शंखचूड़ पहले प्रणाम करते, फिर युद्ध के लिए तैयार होते हैं। एक सौ वर्षों के संघर्ष में किसी पक्ष की जीत नहीं होती। शिव अपने मारे गए योद्धाओं को दिव्य शक्ति से जीवित करते हैं। यह असाधारण अवधि और पुनर्जीवन कथा की अलौकिक भाषा हैं।

हरि वृद्ध ब्राह्मण बनकर राजा से पहले दान का वचन लेते और फिर कवच माँगते हैं। शंखचूड़ उसे दे देते हैं। हरि उनका रूप धरकर तुलसी के पास जाते और पति होने का छल करके अन्तरंग मिलन करते हैं; इसका विस्तृत खुलासा अगले अध्याय में है। शिव हरि का तेजस्वी त्रिशूल चलाते हैं। राजा धनुष छोड़कर कृष्ण का ध्यान करते हैं और मारे जाते हैं। वे फिर सुदामा के गोप-रूप में दिव्य रथ से गोलोक जाते हैं, जहाँ राधा और कृष्ण प्रेम से उनका स्वागत करते हैं। इसे हिंसा या आत्महानि से दिव्य फल पाने का तरीका न मानें।

त्रिशूल हरि के पास लौटता है और शंखचूड़ की अस्थियों से शंख बनने का प्रसंग आता है। स्रोत शंख और उसके जल की पवित्रता, हरि-लक्ष्मी की उपस्थिति तथा शिव को शंख-जल न देने की बात करता है। इसी प्रशंसा के बीच स्त्रियों और शूद्रों के शंख बजाने पर लक्ष्मी के चले जाने का भेदभावपूर्ण कथन है। वह हमारा आचरण-नियम नहीं; जाति या लिंग से पूजा का अधिकार नहीं घटता। स्नान, सम्पन्नता और अशुभ मिटने के वचन गारंटी नहीं हैं। शिव अपने लोक लौटते हैं, देवता पद पाते हैं और दिव्य संगीत, पुष्प तथा स्तुति से अध्याय समाप्त होता है।

Shiva enters battle himself. Shankhachuda first bows, then prepares to fight. A hundred years pass without victory on either side. Shiva divinely restores his fallen warriors. The extraordinary duration and restoration to life are supernatural narrative motifs.

Hari, disguised as an old Brahmin, first secures a promise of charity, then requests the kavacha. The king gives it. Hari impersonates Shankhachuda and approaches Tulasi for intimacy through the false identity of her husband; the next chapter explains the encounter. Shiva launches Hari's radiant trident. The king lays down his bow, meditates on Krishna and is killed. Returning to his cowherd form as Sudama, he travels by divine chariot to Goloka, where Radha and Krishna welcome him affectionately. This is not a way to obtain spiritual rewards through violence or self-harm.

The trident returns to Hari, and Shankhachuda's bones become conches. The source praises the conch and its water, Hari and Lakshmi's presence, and excludes conch-water from Shiva's worship. It also contains a discriminatory claim that Lakshmi leaves when women or Shudras blow a conch. This is not our rule: caste and gender do not diminish a person's right to worship. Bathing, prosperity and removal of misfortune are not guaranteed. Shiva returns to his abode, the gods recover their positions, and celestial music, flowers and praise close the chapter.

तुलसी का विरोध, शाप और रूपान्तरण

KATHA 9.24.1–101

नारद के प्रश्न पर नारायण अब उस छल का वर्णन करते हैं। पति का रूप धरे हरि विजय की घोषणा के साथ

आते हैं। तुलसी प्रसन्न होकर दान देतीं, स्वागत करतीं और युद्ध की बात पूछती हैं। वह रूपधारी एक वर्ष के युद्ध, ब्रह्मा द्वारा सुलह और देवताओं के अधिकार लौटाने की कहानी कहता है। यह छल करने वाले का कथन है, पिछले अध्याय के युद्ध का सत्य विवरण नहीं। अन्तरंग मिलन में अन्तर अनुभव करके तुलसी पहचान पर प्रश्न उठाती हैं। हरि अपना रूप प्रकट करते हैं। तुलसी अचेत होतीं, फिर सँभलकर छल और पति की मृत्यु पर विरोध करती हैं। वे उन्हें पत्थर-हृदय कहती और पत्थर हो जाने का शाप देती हैं। उनका शोक और आरोप कथा का आवश्यक हिस्सा है; उन्हें दोषी या छल को सहमति नहीं कहा गया है।

हरि अपने उत्तर में दोनों के पूर्व तप और इच्छाओं का फल मिलने की बात करते हैं। तुलसी के दिव्य रूप को लक्ष्मी जैसा स्थान, शरीर को गण्डकी नदी और केशों को तुलसी-पौधा होने का आश्वासन मिलता है। अनेक लोकों और वनों में पौधे की प्रतिष्ठा तथा उसके मूल में तीर्थों का निवास कहा गया है। गोलोक में कृष्ण का साथ, नदी-रूप में समुद्र का संग और वैकुण्ठ में हरि का साथ भी कहा गया है। तुलसी-पत्र, जल, काष्ठ-माला, कार्तिक में अर्पण और सत्य-वचन की महिमा आती है। साथ ही असत्य शपथ के दण्ड, पत्ते तोड़ने के निषिद्ध समय और धुले पत्ते फिर उपयोग करने की चर्चा है। ये पुराने स्रोत के धार्मिक कथन हैं, सार्वभौम घरेलू नियम या भय पैदा करने का आधार नहीं। मृत्यु के समय जल देने के वचन चिकित्सा या देखभाल का निर्देश नहीं हैं।

हरि कहते हैं कि तुलसी के शाप से वे गण्डकी के पास पत्थर होंगे। कीटों से चक्र-चिह्न बनने का पौराणिक वर्णन शालिग्राम की चर्चा खोलता है। द्वार, रंग, आकार और चक्रों के अनुसार लक्ष्मीनारायण, रघुनाथ, वामन, दामोदर, अनन्त, नृसिंह और अन्य विष्णु-रूपों की नामावली आती है। यह धार्मिक वर्गीकरण है, भूविज्ञान या खरीदने की सलाह नहीं। स्रोत कुछ आकारों से सम्पन्नता और कुछ से बीमारी, गरीबी या मृत्यु जोड़ता है। शालिग्राम-पूजा, स्नान-जल, तीर्थ, पूर्वजों और मुक्ति की महिमा तथा शपथ के दण्ड भी आते हैं; बीच का बिना संख्या का पद भी इसी जल-महिमा में है। इन आश्वासनों और धमकियों को स्वास्थ्य, धन या सुरक्षा की गारंटी न मानें।

तुलसी, शालिग्राम और शंख को साथ रखने की प्रशंसा तथा अलग करने पर रोग और दाम्पत्य-वियोग के दण्ड-वचन आते हैं। वे बीमारी या सम्बन्ध टूटने का कारण तय नहीं करते। हरि तुलसी के लम्बे दाम्पत्य से उपजे शोक को पहचानते हैं। तुलसी दिव्य रूप पाती और हरि के साथ वैकुण्ठ जाती हैं; लक्ष्मी, सरस्वती, गंगा और तुलसी का प्रिय स्थान बताया जाता है। उनका छोड़ा शरीर गण्डकी होता है और हरि का पत्थर-रूप उसके तट पर स्थित होता है। नदी और भूमि पर पड़े पत्थरों की पूजा-योग्यता का स्रोत-भेद देकर अध्याय समाप्त होता है। यह रूपान्तरण आत्महानि, सती या वास्तविक भूगर्भीय प्रक्रिया का वर्णन नहीं, न विवाह-तिथि निर्धारित करता है।

Narayana now answers Narada's question about the deception. Hari arrives in the husband's form with proclamations of victory. Tulasi joyfully gives charity, welcomes him and asks about the war. The impersonator claims a year of fighting ended with Brahma's mediation and restoration of the gods' rights. This is the deceiver's speech, not a true account of the preceding battle. Sensing a difference during intimacy, Tulasi

challenges his identity. Hari reveals himself. She faints, recovers, protests the deception and her husband's death, calls him stone-hearted and curses him to become stone. Her grief and accusation are essential; she is not blamed and fraud is not called consent.

Hari invokes their earlier austerities and desires. Tulasi is promised a divine status like Lakshmi, her body the Gandaki river and her hair the sacred plant. Its presence in many realms and forests and the pilgrimage places at its roots are praised. Companionship with Krishna in Goloka, the ocean as river consort and Hari in Vaikuntha is also described. Leaves, water, wooden beads, Kartika offerings and truthfulness receive religious praise. Penalties for false oaths, forbidden leaf-picking occasions and reuse of washed leaves also appear. These are old source statements, not universal household rules or reasons for fear. Deathbed-water promises are not medical or care instructions.

Hari says Tulasi's curse will make him stone beside the Gandaki. Mythic insects forming chakra marks introduce Shaligrama classification by openings, colour, shape and markings: Lakshmi-Narayana, Raghunatha, Vamana, Damodara, Ananta, Narasimha and other Vishnu forms. This is religious classification, not geology or buying advice. Some shapes are linked with prosperity, others with illness, poverty or death. Worship, bathing water, pilgrimage, ancestors, liberation and oath penalties are discussed; the unnumbered distich also praises water. These assurances and threats guarantee neither health nor wealth nor safety.

Keeping Tulasi, stone and conch together is praised, while separating them attracts source threats of illness and marital separation. These do not explain illness or broken relationships. Hari acknowledges grief arising from her long marriage. Tulasi receives a divine form and joins him in Vaikuntha alongside Lakshmi, Sarasvati and Ganga. Her abandoned body becomes the Gandaki; Hari's stone form remains at its bank. The source closes by distinguishing stones in the river from those on land for worship. This transformation is neither self-harm or sati nor an actual geological account, and determines no wedding date.

तुलसी का सम्मान और समापन-स्तुति

KATHA 9.25.1–44

नारद पूछते हैं कि तुलसी की पूजा और स्तुति सबसे पहले किसने की। सूत संवाद को आगे बढ़ाते हैं और नारायण हरि का प्रसंग सुनाते हैं। लक्ष्मी और गंगा तुलसी के नए स्थान को स्वीकार करती हैं, लेकिन सरस्वती ईर्ष्या में उन्हें चोट पहुँचाती हैं। अपमानित तुलसी अदृश्य होकर वन में चली जाती हैं। हरि सरस्वती को शान्त करके तुलसीवन में जाते और तुलसी की पूजा करते हैं। स्रोत दस-अक्षर मन्त्र और दीप, धूप, सिन्दूर, चन्दन, फूल तथा नैवेद्य का वर्णन करता है। यहाँ मन्त्र या दीक्षा-विधि नहीं दी गई है। तुलसी प्रकट होती हैं और हरि उन्हें सभी द्वारा आदर पाने तथा अपने सिर और वक्ष पर स्थान देने का वर देते हैं।

नारद के अगले प्रश्न पर हरि की स्तुति सुनाई जाती है। उसमें वृन्दा, वृन्दावनी, विश्वपूजिता, विश्वपावनी, पुष्पसारा, नन्दिनी, तुलसी और कृष्णजीवनी नामों से उनके समूह, वन, सार्वभौम सम्मान, पवित्रता, फूलों में श्रेष्ठता, आनन्द, अतुलनीयता और कृष्ण-प्रियता का भाव आता है। स्रोत में नन्दिनी और नन्दनी के रूप बदलते हैं। अपमान के कारण रोती तुलसी को हरि अपनाते हैं। सरस्वती से मेल कराया जाता है; सरस्वती, लक्ष्मी और गंगा उनका स्वागत करती हैं। पहले का अपमान छिपाकर केवल सुखद समापन नहीं बनाया गया है। यह स्तुति अलग माँगी गई तुलसी आरती का पाठ नहीं है।

अन्त में आठ नामों के पाठ, कार्तिक पूर्णिमा के जन्मोत्सव, तुलसी-पत्र अर्पण और स्तुति सुनने की महिमा है। सन्तान, साथी, मित्र, रोग से मुक्ति, बन्धन और भय मिटने के आश्वासन स्रोत के धार्मिक वचन हैं, चिकित्सा, प्रजनन या सम्बन्ध की गारंटी नहीं। जन्मोत्सव की पूर्णिमा विवाह की द्वादशी नहीं। स्रोत काण्व शाखा से जोड़े ध्यान और पूजा में पौधे का आवाहन किए बिना ध्यान, अर्पण तथा प्रणाम की चर्चा करता है; यह पूर्ण विधि-पुस्तिका नहीं। पाप जलाने वाली अग्नि का रूपक, हरि-भक्ति और मुक्ति की प्रशंसा के बाद नारायण कहते हैं कि तुलसी का प्रसंग पूरा हुआ, और नारद से अगला प्रश्न पूछते हैं। यही चयनित कथा का समापन है।

Narada asks who first worshipped and praised Tulasi. Suta advances the dialogue and Narayana recounts Hari's actions. Lakshmi and Ganga accept Tulasi's new place, but jealous Sarasvati strikes her. Humiliated, Tulasi disappears into the forest. Hari appeases Sarasvati, then worships Tulasi in her grove. The source describes a ten-syllable mantra and lamp, incense, vermilion, sandalwood, flowers and food offerings. No mantra or initiation method is supplied here. Tulasi appears, and Hari promises universal honour and a place on his head and breast.

In answer to Narada's next question, Hari's praise unfolds the names Vrinda, Vrindavani, Vishvapujita, Vishvapavani, Pushpasara, Nandini, Tulasi and Krishnajivani: group, forest, universal reverence, purity, excellence among flowers, joy, incomparability and dearness to Krishna. The source varies Nandini/Nandani. Hari receives Tulasi as she weeps over the insult, reconciles her with Sarasvati, and Sarasvati, Lakshmi and Ganga welcome her. The earlier mistreatment is not concealed to manufacture a happy ending. This praise is not the separately requested Tulsi aarti.

The closing discourse praises the eight names, Kartika Purnima birth celebration, leaf offerings and hearing the hymn. Its promises of children, companionship, friends, recovery, freedom and relief from fear are devotional assertions, not medical, fertility or relationship guarantees. The birth full moon is not the wedding Dwadashi. Meditation and worship attributed to the Kanva branch describe contemplating the plant without invocation, offerings and bowing; this is not a complete ritual manual. After the image of fire consuming sins and praise of devotion and liberation, Narayana declares Tulasi's account complete and asks what Narada wishes to hear next. Here the selected account ends.

Source licence notice (it travels with every copy of this text):

Adapted from Sanskrit Wikisource contributors, Devi Bhagavata Purana 9.17–25, exact revisions 75089–75097, linked in Sources. Source electronic text and these adaptations: CC BY-SA 4.0, https://creativecommons.org/licenses/by-sa/4.0/ . Changes by Valkala Editorial (2026): original condensed Hindi prose, Roman-Hindi and English counterparts, editorial context and safety notices. No source endorsement is implied. This licence applies to this account, not unrelated site code or content.
Copyright 2026 Valkala Editorial (original adaptations); shared under CC BY-SA 4.0. Source attribution remains Sanskrit Wikisource contributors.